This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

227

M - ~~2181~~
227

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M ~~2181~~ 227 विषय पूजाविधी.

नांव प्रतिसरबंध (MSS)

लेखक / लिपीकार —

पृठ 02 काळ — पूर्ण / ~~अपूर्ण~~

Checked 2012

227
M - ~~1818~~

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीगणेशाय नमः॥ अथप्रतिसरबंधः॥ नांदीमुखदिने प्रदोषांते उदकशांतिप्र
तिसरबंधंचकुर्यात्॥ तत्रविशेषः॥ करिष्यमाणकर्मांगभूतंप्रतिसरबंधंक
रिष्ये॥ कृणुष्वपाजःप्रसिं॰ मदेच्चिदस्यप्र॰॥ ब्रदेवि॥ अग्नेयशस्विन्यशा॰
मिमंपश्चदनुजीवायसर्वे॥ हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइत्यनुवाकः॥ पव
मानःसुवर्जनः॥ मोर्जयंत्सापुनातु॥ उदुत्तमंवरुण॰ अदितयेस्पामा॥ अ
लं॰ नावामृषभो॰ व्रतानि॥ यत्किंचेदंवरुण॰ प्रियासः॥ अवतेहेडो॰ थः
कृतानि॥ तत्वायामि॰ युःप्रमोषिः॥ परिणोरु॰ भद्रयाहि॥ स्कहिभ्युः सेनाः
॥ मिढुष्टम॰ गहि॥ अर्हन्बिभर्षिसायं॰ त्वदस्ति॥ त्वमग्नेरुद्रो॰ त्मना॥ आ
वोराजानं॰ कृणुध्वं ब्रह्मन्॰ ब्रह्मसमिन्द्रवत्याहुतिनां॥ विष्ण्वानुकं॰ ईत्र

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३॥० धोरुगायः ॥ तदस्य प्रियं० मध्व उत्सः ॥ प्रतद्विष्णु० निविश्वा परो मात्रया० स्य
वित्से ॥ विचक्रमए० एतां ॥ विचक्रमे त्रू० नाम ॥ जातवेदसे० तात्स्यग्नि
:॥ हिरण्यवर्णां० विदेयं पुरुषानहं ॥ नमोस्तु० त्री: ॥ भूर्भुवः स्वः ॥ दधि
क्रो० आपोहि० भूर्भुवः स्वः ॥ त्र्यंबकं० तात् ॥ अग्नि० सोम० यज्ञं०
ब्रह्मा० देवा० बृहत्सा० रक्षा ॥ योब्रह्मा० ॥ योब्रह्मा ब्रह्मणउज्ज भा
रप्राणश्वरः कृत्तिवासाः पिनाकी ॥ ईशानो देवः सन आयुर्द धातु तस्मै ३
जुहोमि हविषा घृतेन ॥ विभ्राजमानः सरिरस्य मध्याद्रोचमानो घ
र्मरुचिर्य आगात् ॥ सम्रत्स्कपान्त्रा नपनुध्य घोरा मिहायुषे नो घृतमस्तु देवः ॥

ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषु गर्भं यमादधात्पुरुरूपं जयंत ॥ सुवर्णरंभं ग्रहमर्कम
र्च्यं तमायुषे वर्द्धयामो घृतेन ॥ श्रियं लक्ष्मीमौपलामंबिकां गां षष्ठीं च या
मिंद्रसेनेत्युदाहुः ॥ तां विद्यां ब्रह्मयोनिं सरूपामिहायुषे तर्पयामो घृते
न ॥ दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः सयोन्यः सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाः ॥ सस्
नवः सपतयः सयूथ्या आयुषे नो घृतमिदं जुषंतां ॥ दिव्या गणा बहुरूपाः
पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमथंतु वीरान् ॥ तेभ्यो जुहोमि बहुधा घृतेन मा
नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् ॥ एकः पुरस्तात्य इदं बभूव यतो बभूव
भुवनस्य गोपाः ॥ यमप्येति भुवनं सांपराये स नो हविर्घृतमिहायुषेत्तु दे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॰कः॥ वसून्रुद्रानादित्यान्मरुतोथसाध्यान् मन्त्वक्षान्गंधर्वांश्च पित
ॄंश्च विश्वान्॥ भृगून्सर्पांश्चांगिरसोथसर्वान्घृतकुल्यास्वायुष्मा
महत्यामराश्च तत्॥ ८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=16.09.19 12:24
,TRANSFERRED=2019/09/16 at 12:26:30
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0001816
,Book Name=M-227-PARTISARBANDH\
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection